-भूमिका-

कई दिनों से मन में शोध कार्य करने की एक साध थी। अत: यह पहले ही निश्चित कर लिया था कि मुझे आधुनिक नारी साहित्य में ही शोध कार्य करना है। एम.फिल उपाधि के लिए मेरे लघु शोध प्रबंध का विषय था 'मैत्रेयी' पुष्पा के 'विजन' उपन्यास का अनुशीलन'। इस वजह से आधुनिक नारी साहित्य को कुछ पढ़ने-समझने का सुअवसर मिला। संयोग से मुझे प्रभा खेतान द्वारा लिखित उपन्यास 'छिन्नमस्ता' पढ़ने का अवसर मिला। इसमें प्रभा जी ने नारी शोषण के चक्रव्यूह को छेदकर नारी अस्मिता और नारी वेदना को 'प्रिया' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रभा खेतान के इस उपन्यास को पढ़कर मैं उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से बहुत प्रभावित हुई।

नारी जागरण, अस्मिता, अस्तित्व एवं सक्षमीकरण में अपना सफल योगदान देनेवाली प्रभा खेतान एक विशिष्ट महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है। उन्होंने नारी की स्थापित मान्यताओं और मूल्यों में साहित्य के माध्यम से परिवर्तन किया। सीता सावित्री के मिथक को अस्वीकार कर नारी को तेजस्विनी बनाया। पुरूष के अहं का विरोध कर अपना स्वतंत्र स्थान स्थापित किया। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने नारी जाति का मार्गदर्शन किया। आज नारी घर के सभी उत्तरदायित्वों का निर्वाह करती हुई अपने व्यवसाय के कर्तव्यों को भी निभाती है। अथक परिश्रम के बावजूद पुरूष उसकी उपेक्षा कर उसका आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक शोषण करता है। तब वह पूरी शक्ति के साथ उसका विरोध कर अपना अस्तित्व स्थापन करने का प्रयास करती है।

समकालीन महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, सूर्यबाला, राजी सेठ, रजनी पन्नीकर, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, मृदुला

गर्ग, चंद्रकांता, कांता भारती, अलका सरावगी, नासिरा शर्मा, मेहरून्निसा परवेज, मालती जोशी, मंजुल भगत, शशिप्रभा शास्त्री, निरूपमा सेवती, कुसुम अंचल, प्रतिभा वर्मा, ऋता शुक्ला, कविता सिंह, शुभा वर्मा, प्रभा सक्सेना, सुषमा बेदी, निलिमा सिंह, मणिका मोहिनी, कृष्णा अग्निहोत्री आदि के औपन्यासिक साहित्य में प्रभा खेतान का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। साहित्य के साथ-साथ व्यवसाय जगत में सफलता प्राप्त कर अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करनेवाली और 'डायनमिक' महिला के रूप में विख्यात विविध पुरस्कार प्राप्त 'प्रभा खेतान' ने महिला उपन्यासकारों में अपनी अलग पहचान बनायी है। स्त्री के भोगे हुए यथार्थ का वर्णन करनेवाली, मारवाड़ी समाज का यथार्थ चित्रण करनेवाली, स्त्री की समस्याओं के साथ-साथ व्यवसायिक जगत में आनेवाली समस्याओं को अपने साहित्य में चित्रित करनेवाली यह एक 'बोल्ड लेखिका' है। प्रभा के साहित्य में नारी मन को सशक्त अभिव्यक्ति मिली हैं। उनके साहित्य की अधिकांश नारियाँ परिस्थितियों के सामने हार मानकर आँसू बहाने की नियति को अस्वीकार कर संघर्ष करते हुए आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में अपनी एक 'आइंडेंटीटी' प्रस्थापित करती है। ऐसी संघर्षशील, निर्भीक, प्रतिभासंपन्न प्रभा के उपन्यास को पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुई और उनके उपन्यास साहित्य पर शोध कार्य करने का निश्चय कर लिया। मेरी यह इच्छा डॉ.अकीला शेख जी अगस्ति, कला, वाणिज्य एवं दादासाहेब रूपवते विज्ञान महाविद्यालय अकोले के हिंदी विभाग की अध्यक्ष को बतायी। हमने प्रभा जी के उपन्यास साहित्य पर दीर्घ चर्चा की। आज तक प्रभा के उपन्यासों पर जो अनुसंधान हुआ वह केवल 'नारी विमर्श' तक ही सीमित है। शायद ही उनके समग्र उपन्यास साहित्य के विश्लेषण पर शोधकार्य हुआ हो। तब 'प्रभा खेतान के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' इस विषय पर शोध-कार्य करने की स्वीकृति मेरी पूज्य मार्गदर्शिका डॉ.अकीला शेख जी ने देकर मुझे उपकृत किया।

प्रभा खेतान ने नारी समस्याओं को लेकर उपन्यासों की रचना की हैं। नारी मन की गूढ गहन गुत्थियों को बड़े ही रोचक ढंग से उजागर किया है। नारी की विभिन्न स्थितियों को उन्होंने करीब से महसूस किया और नारी हृदय की अतल गहराइयों में गोता लगाया है। उन्होंने नारी की अंतर्वेदना, भावुकता, कुंठा, प्रेम, त्याग, विद्रोह आदि भावनाओं का सूक्ष्म विवेचन अपने उपन्यासों में किया है। प्रभा नारी को आर्थिक स्वतंत्रता, पुरूष के बराबर अधिकार और शिक्षा देनेवाली निष्णात लेखिका है।

प्रभा ने जीवन की विभिन्न पहलुओं को अपने उपन्यास साहित्य में संजोकर अपनी रचना क्षमता का परिचय दिया है। उनके उपन्यासों में कथ्यगत विषय की विविधता दिखाई देती है। मानवी जीवन के लगभग सभी विषयों को प्रभा ने अपने उपन्यासों में समेटा है। उन्होंने नारी जीवन की समस्याएँ, दांपत्य तथा दांपत्येत्तर संबंध, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याएँ, बदलते हुए जीवन मूल्य, नारी की बदलती स्थिति, उद्योग जगत की समस्याएँ, महानगरीय जीवन आदि का चित्रण किया है। प्रभा ने अपनी कलम से अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायी है। इसीलिए मैंने इस महान लेखिका के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न किया है।

शोध को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए उसका नियोजन आवश्यक है। हर शोध कार्य की अपनी व्याप्ति और सीमा होती है। उसके सामंजस्य से ही शोधकार्य सरलता से संपन्न होता है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय 'प्रभा खेतान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' से संबंधित है। इसमें प्रभा का उपेक्षित बचपन, संघर्षशील और मेहनती व्यक्तित्व, प्रतिभासंपन्न रचनाकार

तथा सफल उद्योजक आदि रूपों का विस्तृत विवेचन करते हुए उनके साहित्य संसार का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय 'प्रभा खेतान के उपन्यासों का कथ्यात्मक परिचय' में प्रभा खेतान के समस्त उपन्यासों का कथ्यात्मक परिचय देते हुए उनके चिंतन पक्ष के विविध आयाम बताए गए हैं। अंत में निष्कर्ष भी प्रस्तुत है।

तृतीय अध्याय में 'प्रभा खेतान के उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र चित्रण' का विश्लेषण हैं। इसमें प्रमुख एवं सहायक पात्रों के वैशिष्ट्य का विवेचन है।

चतुर्थ अध्याय में 'प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित परिवेश और समस्याएँ' चित्रित की गई है। जिनमें विशेष रूप से आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिवेशों में निर्मित समस्याओं की समीक्षा की गयी है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

पंचम अध्याय 'प्रभा खेतान के उपन्यासों का शिल्प विधान' से संबंधित है। इसमें प्रभा के उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरे, कहावते, सूक्तियाँ, भाषा, शब्द प्रयोग एवं विभिन्न शैलियों का विस्तार से वर्णन किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत करने के साथ ही उपन्यास के शीर्षक एवं उसकी सार्थकता आदि को स्पष्ट किया गया है।

षष्ठ अध्याय 'समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान' में कृष्णा सोबती, अलका सरावगी, ममता कालिया, मंजुल भगत, सूर्यबाला, शशिप्रभा शास्त्री, राजी सेठ, रजनी पन्नीकर, मैत्रेयी पुष्पा आदि महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में प्रभा खेतान के योगदान को स्पष्ट करते हुए अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार में संपूर्ण अध्यायों के निष्कर्षों एवं प्रभा खेतान के उपन्यासों की उपलब्धियों को स्पष्ट किया गया है।

परिशिष्ट के अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ एवं कोश ग्रंथ की सूची दी गई हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की निर्देशक श्रद्धेय मातृतुल्य मेरी गुरूवर्य डॉ.अकीला महेबूब शेख, पूर्व हिंदी विभाग अध्यक्ष, अगस्ति कला, वाणिज्य एवं दादासाहेब रूपवते विज्ञान महाविद्यालय, अकोले, जिला अहमदनगर ने अपनी सत्प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं स्नेह से इस शोधकार्य को पूर्ण करने में मेरा सहयोग दिया है। उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन के कारण मैं प्रभा खेतान के विचारों को ग्रहण कर पाई हूँ। उन्होंने अति व्यस्तताओं के बावजूद शोध कार्य की पूर्ति हेतु मुझे प्रेरित किया। उनकी ममता, प्रेम और सहृदयता के कारण हमारे बीच की औपचारिकता खत्म होकर एक स्नेह संबंध ही हम दोनों के बीच बन गया। उनके उचित और अथक मार्गदर्शन के कारण मुझे पुणे विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जिसके लिए मैं उनकी आजीवन ऋणी रहूँगी।

इस अनुसंधान कार्य में जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी विद्वानों, साहित्य मर्मज्ञों, महानुभावों, गुरूजनों एवं हितैषियों की चिरऋणी रहूँगी। जिन्होंने समय-समय पर अपना बहुमूल्य परामर्श देकर मेरा मार्गदर्शन किया है, उन सभी गुरूजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। डॉ.कामिनी तिवारी जी की मैं विशेष आभारी हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे प्रभा खेतान का दुर्लभ साहित्य उपलब्ध कराया। इनके सहयोग के बिना मेरा शोध कार्य आगे नहीं बढ़ सकता था। डॉ.सुरेश बाबर, डॉ. चौदंते, डॉ.जगताप, डॉ.गायकवाड, प्रा.कराळे आदि से मैंने विशेष कृपालाभ प्राप्त किया है।

इस परिश्रम साध्य कार्य को संपन्न करने के लिए अनुमति प्रदान करनेवाले अहमदनगर जिला मराठा विद्या प्रसारक समाज के अध्यक्ष माननीय श्रीमान माधवराव जी मुळे जी, मा. सचिव श्री खानदेशे जी, मा.सह सचिव सौ.दीपलक्ष्मी म्हसे जी, माननीय निरीक्षक श्री पवार सर जी, मा.श्री शिंदे सर जी की मैं शतशः ऋणी हूँ।

साथ ही प्रस्तुत कार्य के लिए मेरे परिवार जनों का अपूर्व सहयोग रहा है।

इसमें मेरी माता शारदा जी की ममता एवं पिता श्री अर्जुन जी की तपस्या है कि आज मैं इतना सोच एवं समझ पाती हूँ। मेरे बड़े भैय्या गणेश जी एवं बड़ी बहनों का निश्चल प्यार ही है जो मुझमें पढ़ने की इच्छा पैदा करता है।

एक सच्चे दोस्त एवं सहचर के रूप में मेरे सृजन यज्ञ में मेरा सहयोग देकर मुझे प्रोत्साहित करने वाले मेरे पति श्री.गणेश सरोदे जी का साथ तो शब्दातीत है। उसी तरह मेरी संसार लता की कली मेरी पुत्री यशस्वी (खुशी) जो मेरी व्यस्तता के कारण मेरे वात्सल्य से परे रही पर कभी शिकायत नहीं की, इन सभी के प्रेमपूर्ण सहारे के कारण मैं उनकी ऋणी हूँ।

अन्य आत्मीय जनों में प्रा.आनंद त्रिपाठी प्रा.वनिता मोकाटे, मेरे जीजा जी गणेश गवंडी जी भी धन्यवाद के पात्र हैं। मैं उन सभी विद्वान लेखकों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके ग्रंथों से मैं लाभान्वित हुई हूँ।

अंत में इस शोध प्रबंध को सजाने में प्रबंध के टंकक श्री महेश गिते एवं सोहेल तांबोळी ने शोध प्रबंध को सुरूचिपूर्ण ढंग से टंकित किया है। उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।